४. मेरी स्मृति

– डॉ. रमाकांत श्रीवास्तव

गई है पिकी
प्रतीक्षारत पुनः
आम्र शाखाएँ ।

महुआ खड़ा
बिछा श्वेत चादर
किसे जोहता ।

किसकी व्यथा
छा गई बन घटा
नभ है घिरा ।

साँझ का तारा
किसे खोजने आया
आम निशा में ।

कौन संदेशा
ले पवन आया है
सुनने तो दो ।

रची-बसी हो
मेहँदी की गंध में
याद आती हो ।

खुल गए हैं
पी कहाँ पुकार से
पृष्ठ पिछले ।

कटे बिरिछ
गाँव की दुपहर
खोजती साया ।

परिचय

जन्म : १९२१, रायबरेली (उ.प्र.)
परिचय डॉ. श्रीवास्तव जी ने १९४४ से अब तक पत्रकारिता और संपादन को व्यवसाय एवं मिशन के रूप में जिया । आपने दैनिक, साप्ताहिक, मासिक पत्रों के संपादन के अतिरिक्त हिंदी समिति, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान में प्रधान संपादक (राजपत्रित) के रूप में दरजनों विविध विषयक संदर्भ एवं मानक ग्रंथों का संपादन किया है ।
प्रमुख कृतियाँ : २० पुस्तकें प्रकाशित । 'बेटे को क्या बतलाओगे' (उपन्यास) आदि ।

पद्‌य संबंधी

प्रस्तुत कविता हाइकु विधा में लिखी गई है । यहाँ डॉ. रमाकांत श्रीवास्तव जी ने प्रत्येक हाइकु में अलग-अलग विषयों पर लेखन किया है । आपने इन रचनाओं में आम, महुआ, आकाश, तारा, पवन, मेहँदी, गाँव आदि के बारे में अपने संक्षिप्त विचार व्यक्त किए हैं । इनके अतिरिक्त झींगुर, कोयल आदि की खुशियों को भी आपने इस कविता में स्थान दिया है ।

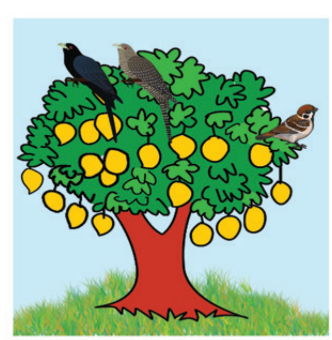

गाँव मुझको
मैं ढूँढ़ता गाँव को
खो गए दोनों ।

वर्षा की साँझ
बजाते शहनाई
छिपे झींगुर ।

बजाने आई
पिकी छिप बाँसुरी
अमराई में ।

फूल खिलता
महक मुरझाता
स्वप्न बनता ।

बड़े सवेरे
उठ जातीं चिड़ियाँ
जगाता कौन ?

आए कोकिल
धुन वंशी की गूँजे
बौर महके ।

— o —

सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

(१) पहचान कर लिखिए :

१. चहचहाने वाली
२. कूकने वाली
३. महकने वाला
४. शहनाई बजाने वाले

(२) हाइकु में निम्नलिखित अर्थ में आए शब्द :

१. पेड़
२. शाम

(३) निम्न पंक्तियों का भावार्थ लिखिए :

'गाँव मुझको
मैं ढूँढ़ता गाँव को
खो गए दोनों ।'

शब्द संसार

जोहना क्रि.(दे.) = प्रतीक्षा करना
बिरिछ पुं.सं.(दे.) = वृक्ष
महुआ पुं.सं.(दे.) = एक प्रकार का वृक्ष
पिकी स्त्री.सं.(सं.) = कोयल

स्वाध्याय

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-**

(१) पहचानकर लिखिए :

१. प्रतीक्षा करने वाली -------
२. संदेश लाने वाला -------
३. खो जाने वाले -------
४. खोजने आने वाला -------

(२) जोड़ियाँ मिलाइए :

अ	आ
१. गाँव की दोपहर	झींगुर
२. मेहँदी की गंध	व्यथा
३. शहनाई	छाँव
४. छाई घटा	याद

(३) कविता में 'कोयल' तथा 'साँझ' के संदर्भ में आया वर्णन लिखिए ।

(४) इन पंक्तियों का भावार्थ लिखिए :
'महुआ खड़ा ------ नभ है घिरा ।'

(५) 'हरी-भरी वसुंधरा के प्रति मेरी जिम्मेदारी' पर अपने विचार लिखिए ।

(६) निम्न मुद्दों के आधार पर पद्य विश्लेषण कीजिए :

१. रचनाकार का नाम
२. रचना का प्रकार
३. पसंदीदा पंक्ति
४. पसंद होने का कारण
५. रचना से प्राप्त संदेश/प्रेरणा

अपठित पद्यांश

निम्नलिखित अपठित पद्यांश पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-

निर्मम कुम्हार की थापी से कितने रूपों में कुटी-पिटी,
हर बार बिखेरी गई किंतु मिट्टी फिर भी तो नहीं मिटी ।
आशा में निश्छल पल जाए, छलना में पड़कर छल जाए,
सूरज दमके तो तप जाए, रजनी ठुमके तो ढल जाए,
यों तो बच्चों की गुड़िया-सी भोली मिट्टी की हस्ती क्या,
आँधी आए तो उड़ जाए, पानी बरसे तो गल जाए,

१. संजाल पूर्ण कीजिए :

मिट्टी पर परिणाम करने वाले घटक

(२) विधान के सामने सही अथवा गलत लिखिए :

१. हवा के आने से मिट्टी गल जाती है ।
२. पानी बरसने से मिट्टी उड़ जाती है ।
३. सूरज के दमकने पर मिट्टी ढल जाती है ।
४. मिट्टी कभी-कभी बिखर जाती है ।

(३) पद्य की प्रथम चार पंक्तियों का भावार्थ लिखिए ।

उपयोजित लेखन

'रेल की आत्मकथा' विषय पर लगभग सौ शब्दों में निबंध लिखिए ।

76R8N9